स्वर्णिम युग लाने में मेरा भी सहयोग

आज हर एक के दिल से ये आवाज़ सुनाई देती है कि कुछ नया हो, नया भारत हो जहां हम सभी सुख, शान्ति से रहें और जो भी दुःख देने वाली बातें हैं वे सब वहाँ ना हों। लेकिन सवाल उठता है कि सब सुखी कैसे होंगे? कोई भी सत्संग होता है आर्य समाज का, सनातनियों का, तो क्या कहते हैं? सर्वे भवन्तु सुखिनः..., सब सुखी हों। हर एक सत्संग में ऐसे गाते हैं। ऐसे ही हमारे कहने से सब सुखी हो जायेंगे क्या? अगर हमारे कहने से विश्व में सब सुखी हो जायेंगे तो इतने सब कार्यक्रम आदि करने की क्या ज़रूरत है, ऐसे ही हो जायेंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। मनुष्य कर्मों से ही गिरे और कर्मों से ही चढ़ेंगे। दुःख और अशान्ति किससे मिलती है? बुरे कर्मों से। सुख और शांति कैसे मिलेगी? ये एक पहेली है जिसके बारे में हम बताना चाहते हैं। सुख, शांति कैसे मिलेगी? अच्छे कर्मों से। कर्म कैसे किये जाते हैं? संकल्पों से। संकल्प कैसे ठीक होंगे? संस्कार को ठीक करने से और ठीक इच्छा रखने से। उसको ठीक करने से सब ठीक हो जायेंगे और सब सुखी हो जायेंगे। इस संदर्भ में परमात्मा ने बहुत ही क्रान्तिकारी एवं सटीक नियम बताए हैं। संसार में आज तक यह बात किसी ने नहीं कही है, यह बात है 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन।' संसार में पहली बार ये बात सिर्फ परमात्मा ने कही, जिसकी तुलना या उपमा किसी भी दर्शन शास्त्र से नहीं हो सकती। देखिये, दुनिया में पुस्तकें भरी पड़ी हैं, इकट्ठा करें तो हिमालय जितनी ऊँचाई हो सकती है इतनी किताबें हैं संसार में। लेकिन उनसे प्राप्ति क्या हुई? खोदा पहाड़ निकला चूहा वो भी मरा हुआ।

- ब्र. कु. गंगाधर

विश्व में परिवर्तन कैसे आयेगा? सब कहते हैं, परिवर्तन आना चाहिए। शांति स्थापन होनी चाहिए। कैसे परिवर्तन आयेगा, क्या छू मंतर से या किसी जादू से। कितना बड़ा विश्व है! बाप की बात बेटा नहीं मानता, बेटे की बात बाप नहीं मानता। पति की बात पत्नी नहीं मानती और पत्नी की बात पति नहीं मानता। ऐसी स्थिति में संसार कैसे बदलेगा? और यहाँ ब्रह्माकुमारीज़ कहती है संसार बदल जायेगा। कलियुग चला जायेगा और सतयुग आ जायेगा। क्या कलियुग ऐसे ही चला जायेगा? जैसे अंग्रेज भारत छोड़कर नहीं जा रहे थे, उसको भगाना पड़ा। वो ऐसे ही चले गये क्या? तरीका अपनाना पड़ेगा। तो यहां भी परमात्मा ने तरीका बताया है 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'। ये तरीका परमात्मा का अति तार्किक, मोस्ट लॉजिकल है। कोई भी इसकी आलोचना नहीं कर सकता, उसको काट नहीं सकता, इसे अकाट्य प्रमाण कहते हैं।

संसार एक सबसे बड़े मौलिक नियम के आधार पर चलता है। नियम है, 'कारण और परिणाम (कॉज़ एंड इफेक्ट)।' बिना कारण कोई परिणाम नहीं होगा। अगर कोई परिणाम है, माना ज़रूर कोई कारण होगा। हम इतिहास पढ़ते हैं, कोई जीत गया कोई हार गया। भारतवासी हार गये और मुसलमान जीत गये। इसके लिए इतिहास में कई कारण बताये गये हैं कि वे क्यों जीते और वे क्यों हारे। विज्ञान भी यही कहता है और दर्शन भी यही कहता है कि जैसे बीज बोयेंगे वैसे फल पायेंगे। डॉक्टरी भी यही कहती है कि अगर आप डॉक्टर के पास जाकर कहोगे कि मेरे पेट में दर्द है तो डॉक्टर पूछेगा कि क्या खाया था? ज़रूरत से ज़्यादा खा लिया होगा। कोई न कोई कारण ज़रूर है, तब तो ये परिणाम निकला। इसीलिए जब तक कारण नहीं ढूंढ़ेंगे तब तक निवारण कैसे कर सकेंगे। संसार के कुछ शाश्वत नियम हैं जो हर एक को अनुसरण करने पड़ते हैं। उसी प्रकार संसार में दुःख और अशांति है तो उसके कारण क्या हैं? दुःख और अशांति तो परिणाम है ना, फल है ना। इनका बीज क्या है? उनका कारण क्या है? परमात्मा हमें समझाते हैं कि उनका कारण है मनुष्य के बुरे कर्म। जैसा करोगे वैसा पाओगे। यहाँ तक तो सबने बताया है, बहुत लोगों ने बताया है। लेकिन हम शुरू इसके बाद करते हैं। वे कहते हैं कर्म अच्छे होने चाहिए, लेकिन कर्मों का आधार क्या है वे नहीं जानते। कर्मों का आधार है तीन चीज़ें। एक, मनुष्य के संकल्प। चाहे मंसा हो, वाचा हो या कर्मणा। इसका मूल है विचार या संकल्प। दूसरा, संस्कार। पहले ही जो हमारी मान्यतायें हैं, संस्कार हैं, उनका विचारों पर प्रभाव पड़ता है। तीसरा है स्मृति। कोई आपका मित्र एक बार कहता है कि ये करो। आत्मा में स्मृति पड़ी रहती है कि ये हमारा मित्र है, इसकी बात माननी पड़ेगी। ये काम करना हमारा फर्ज़ बनता है। अगर हमें ये स्मृति न हो तो हमारा हाथ कर्म करने के लिए उठेगा ही नहीं। इस प्रकार संकल्प(विचार), संस्कार और स्मृति, ये तीनों मिलकर कर्म का आधार बनते हैं। इसको ठीक किये बगैर कर्म ठीक नहीं होंगे और कर्म ठीक किये बगैर फल ठीक नहीं होंगे। और विश्व का परिवर्तन करने के लिए इनका परिवर्तन करना ज़रूरी है। इसके बगैर विश्व का परिवर्तन नहीं होगा।

हम सभी चाहते हैं कि विश्व में सुख, शांति हो। भारत सुख, शांति से भरपूर हो, समृद्धि से भरपूर हो, पर हमें इसके लिए क्या परिवर्तन करना होगा, ये हमें मालमू नहीं। ये परमात्मा हमें बताते हैं कि स्वयं में जो बुरे संकल्प, संस्कार और स्मृति उठ रहे हैं, उनका परिवर्तन करने से ही विश्व का परिवर्तन होगा और भारत सुखमय बन सकेगा।

व्यर्थ बातों के बजाए ज्ञान के मनन-चिंतन से फ्रेश हो जायेंगे

साकार में बाबा ने एक बार सभी कारोबार करते हुए हम सब बहनों को सेवा पर भेज दिया। बहुत ज़िम्मेदारियां बाबा खुद ही सम्भालता था, तो मुझे आया कि मैं यहीं बाबा के साथ रह करके, बाबा की कारोबार में कुछ मदद करूँ। परन्तु बाबा किसी को यहाँ नहीं रखता था। फिर भी मधुबन में जब भी बाबा के पास आते थे तो बाबा कमरे में(झोपड़ी में) बुला लेता था। फिर सारे समाचार का लेन-देन करके, सुन-सुनाके सारे मधुबन का चक्कर लगवाता था। तब यह हिस्ट्री हॉल बन रहा था। तो हमारी लाइफ में जो साकार बाबा की बातें याद हैं, वो अभी तक भी साथ दे रही हैं। मेरा एक स्वभाव था जो कुछ बाबा से सीखूँ वो सबको सुनाऊं, तो बाबा हमेशा प्यार से कहता था कि बच्ची जब पुणे से आती हो तो बॉम्बे वालों से भी मिलके आओ और जब मधुबन से जाती हो तो बॉम्बे होके मिलते, जो सुना, सीखा वो सुनाके जाओ। बाबा को सच बोलना बहुत अच्छा लगता था। मैं सच के बिना रह नहीं सकती थी। एक बारी बाबा के साथ कमरे में बाबा की गद्दी पर बैठी थी। बाबा प्यार से दृष्टि दे रहा था। वो दृष्टि कभी मुझे भूलती नहीं है क्योंकि बाबा ने एक बारी बड़ी सभा के बीच में कहा कि जब बाबा योग कराता है तो जैसे बाबा की आँखें खुली हैं, वैसे तुम्हारी आँखें भी खुली रहें। तब से यह सिस्टम बनाई क्योंकि पहले तो भक्ति का संस्कार था, तो कई ऐसे आँखें बन्द करके बैठते थे। लेकिन कायदा यह कहता है कि योग करते-कराते आँखें खुली रखनी है। तभी से दृष्टि का महत्व मालूम पड़ा। तो सामने जो भी दृष्टि देने बैठता था, इतनी अच्छी दृष्टि देता था, जो सारी सभा अशरीरी बन जाए, वो अनुभव अभी तक भी याद है। आजकल मैं देखती हूँ, ड्रामा की नॉलेज बहुत-बहुत यूज़फुल है। बाबा ने हर मुरली में कहा है, हरेक का पार्ट अपना है। यह ऐसे क्यों करता, यह ऐसे क्यों करता... अभी इस तरह से नहीं कहना चाहिए, क्योंकि इतना ज्ञान होते भी कोई कहे कि समझ में नहीं आता है कि क्या करूँ, तो उसे क्या कहेंगे? ऐसी सिचुएशन को समझ करके समा लेना होता है, बाकी यह भी नहीं कि सूक्ष्म संकल्प करते रहें या मूँझते रहें, नहीं। हरेक यह सोचे मुझे क्या करने का है, क्योंकि अंत मते सो गति मेरी होगी। आपस में और बातों की भूँ-भूँ करने के बजाए बाबा के ज्ञान की भूँ-भूँ करो तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें निकलेंगी तो फ्रेश हो जायेंगे।

हरेक यह सोचे मुझे क्या करने का है। क्योंकि अंत मते सो गति मेरी होगी। आपस में और बातों की भूँ-भूँ करने के बजाए बाबा के ज्ञान की भूँ-भूँ करो तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें निकलेंगी तो फ्रेश हो जायेंगे।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

सबके प्रति शुभ भावना-शुभ कामना का भण्डारा भरपूर रखो

हमारा अनादि स्वरूप परमधाम वासी है, आदि स्वरूप, हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हैं। पहले ब्राह्मण पवित्र हैं, देवतायें पूज्य हैं। ब्राह्मण पवित्र बनते लेकिन न पूजा करते न कराते। अभी हम जब ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बने हैं तो पुजारी नहीं हैं, पर पूज्य बन रहे हैं, तो इतने पवित्र बनना है। होली बनो तो योगी बनेंगे। जो होली नहीं बनता वो योगी बन नहीं सकता। तो हो गई हो ली, बीती बात बीती हो गई, तो पवित्र हो गये। बीती बात थोड़ा भी याद आई तो अपवित्र...। किसको देह अभिमान की दृष्टि से देखा या किसने मेरे को देखा क्योंकि वैष्णव ब्राह्मण को कोई टच भी नहीं कर सकते हैं, उसके आगे आ नहीं सकते हैं। तो वहम् वाली पवित्रता नहीं, सच्ची पवित्रता हो अर्थात् संकल्प में, वाणी में, कर्म में, सम्बन्ध में पवित्रता हो। हमारा स्वधर्म शांत है, स्व बाप ऑलमाइटी है, स्व देश निर्वाणधाम है, स्व स्वरूप सत् चित्त आनन्द स्वरूप है, स्व कर्म सुख देना और सुख लेना है। अगर इन पाँचों का स्पष्ट ज्ञान है तो जो सारा कूड़ा-कचिड़ा था वो चला गया। जैसे सूर्य उदय हुआ तो रोशनी भी आई, तो किचड़ा भी गया, होली बन गये। आँख खुल गई, तीसरा नेत्र खुला तो त्रिकालदर्शी बन गये, तीनों लोकों के मालिक हो गये। इन्सान बहुत जल्दी संग के रंग में आकर अन्धकार में आ जाता है। पवित्रता क्या है, उसे यह पता ही नहीं है। अपवित्रता क्या है? पता नहीं है क्योंकि कलियुगी अन्धियारा है। पवित्र इतने बनें जो हमारे पाप कटें, पुण्य आत्मा बनें। इतना पवित्रता का बल चाहिए जैसे कोई कीड़ा अच्छे को भी खराब कर देता है और भ्रमरी बुरे को अच्छा बना देती है। तो कभी किसी को बुरा देखना यह भ्रमरी का काम नहीं है, ब्राह्मणी का काम नहीं है। बदलना उसका काम है, औरों को बदलने में मदद करना उसका काम है। हमारे पास इतनी शुभ भावना-शुभ कामना हो जो हमारे लिए अगर कोई अशुभ सोचे तो भी वो हमें लगेगा नहीं क्योंकि हरेक के लिए शुभ भावना का भण्डारा भरपूर है। हमारे प्रति कोई कैसे भी सोचता है, आपेही ठीक हो जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है, पर हम अपनी शुभ भावना में कोई कमी नहीं करेंगे। हमारी शान इसमें है कि हम अपनी भावनाओं को सदैव सबके लिए बाबा जैसे शुभ बनायें। सबके प्रति श्रेष्ठ कामना हो, कोई स्वार्थ न हो। अगर भोजन पर किसी की खराब नज़र पड़ जाती है तो वह खाना हम नहीं खा सकते क्योंकि उसमें इच्छा होगी, कोई भी नेगेटिविटी होगी तो उसका प्रभाव शरीर को बीमार कर देगा, इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं बच्चे भोजन का भोग लगाके फिर खाओ और पहले सब खायें, फिर तुम खाओ, यह सभ्यता भी यहाँ बाबा सिखा रहे हैं। ऐसे नहीं मैं खा लूँ और किसी की इच्छा हो खाने की, तो वो खाना आपके अन्दर नहीं जायेगा, जायेगा तो भी हज़म नहीं होगा। तो हम खाएं, हमको मिले... नहीं, सबको मिले, सब खाएं।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हमारे पास इतनी शुभ भावना-शुभ कामना हो जो हमारे लिए अगर कोई अशुभ सोचे तो भी वो हमें लगेगा नहीं क्योंकि हरेक के लिए शुभ भावना का भण्डारा भरपूर है।

पुराने संस्कारों से मुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो

जब शिवबाबा के इस विश्व विद्यालय में हम दाखिल हुए, वह तारीख ही हमारे अलौकिक बर्थडे की तारीख है। उस घड़ी से हमारा सम्बन्ध अलौकिक बन गया। वृत्ति, वायब्रेशन भी अलौकिक हो गये। ऐसी कोई युनिवर्सिटी नहीं जहाँ हर एक को ईश्वरीय मर्यादा का कंगन बांधा जाए, यहाँ हमें वह कंगन बांधा गया। बापदादा का हमें यह-यह आदेश है, यह-यह नियम हैं। उस समय से ही हम सबने यह दृढ़ संकल्प लिया कि हमें अनेक आत्माओं का और स्वयं के जीवन का नव निर्माण करना है। हम सब मुसाफिर हैं। नांव में बैठे हैं। हमें मजधार से पार करने वाला खिवैया स्वयं सर्व शक्तिवान परम प्यारा हमारा बाबा है। डोरी उनके हाथ में है। वह कहता है, नइया चलेगी, आंधी तूफान आयेंगे लेकिन घबराना नहीं। आंधी-तूफानों से पार होने वाले का नाम है महावीर। अपना पांव नइया से मरने तक भी उतारना नहीं है, यह तो पक्का ही है। सवाल यह है कि अपनी अलौकिक जीवन पक्की है?

हम सभी अष्ट भुजाधारी हैं। हमारी अष्ट भुजाओं में अष्ट शस्त्र हैं, वह हैं अष्ट शक्तियाँ। तो चेक करो - मेरी भुजायें हर शस्त्र को अच्छी रीति पकड़े हुए हैं? कोई टूट-फूट तो नहीं गया है? रोज़ अमृतवेले देखो हम अष्ट भुजाधारी हैं? जैसे सवेरे-सवेरे अमृतवेले ताकत के लिए माजून खाते, वैसे अपनी अष्ट शक्तियों को अपने पास दौड़ाओ। ऐसे भी नहीं कोई शक्ति ज़्यादा और कोई कम हो। चेक करो सभी शक्तियाँ समान हैं या कम ज़्यादा? कोई का पेच ढीला तो नहीं है? जैसे कार चलते-चलते खड़ी तभी होती जब पेट्रोल नहीं फेंकती, कारण होता पेट्रोल में थोड़ी-सी मिट्टी। ऐसे ही अगर हमारे में थोड़ी भी कमज़ोरी है तो हम अलौकिक जीवन का आनंद नहीं ले सकते। हम सब ब्रह्माकुमार-कुमारी पुराने संस्कारों से, पुरानी आदतों से मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं? जो अभी संस्कारों से मुक्त हैं, वही मुक्ति-जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ? अपने संस्कारों से मेरी स्थिति मुक्त रहती है? या मैं वर्सा तो जीवनमुक्ति का ले रहा हूँ परन्तु अभी मैं संस्कारों के बन्धन में बंधा हुआ हूँ? मैं लौकिक से निकल अलौकिक जीवन, अलौकिक दुनिया निर्माण करने वाला, अलौकिक संस्कार वाला ब्रह्माकुमार हूँ या शूद्र कुमार हूँ? कभी मैं स्व के अलंकार छोड़ दूसरे को दोषी तो नहीं बनाती? इसने ऐसा किया तो मैंने किया, इसने बोला तो मैंने भी बोला। मैं उसे कहती इसमें तुमने अपनी शक्ति क्या दिखाई? बाबा ने कहा है - बच्चे तुम पुण्य आत्मा हो तो मेरे कदम-कदम से, खाने से, पीने से, बोलने से, चलने से सबसे पुण्य होता है? पुण्य करते-करते कोई पाप तो नहीं कर लेते हो, जिससे सौगुणा दण्ड पड़ जाए? मुझे सदा यही फुरना रहता है कि मुझसे ऐसा कोई व्यवहार व बोल-चाल न हो जाए जो धर्म के आगे झुकना पड़े। यही मुझे डर है, बाकी मैं किससे डरती नहीं, दुश्मन मेरा रावण है। बाकी सब मित्र हैं।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

जो अभी संस्कारों से मुक्त हैं, वही मुक्ति-जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ?